आचारधर्मकी प्रस्तावना

'आचारधर्म' ग्रन्थमालाकी भूमिका

'आचारधर्म' अर्थात आध्यात्मिक सिद्धान्तोंके आधारपर जीवनयापन करना !

अधिकांश लोग मानते हैं कि उचित आचार-विचारोंका पालन, कर्तव्यकर्म एवं धर्माचरणके कृत्य ही 'आचारधर्म' है । 'आचारधर्म'का इतना संकीर्ण अर्थ न समझें । आचारधर्मकी व्यापक अर्थपूर्ण परिभाषा इस प्रकार है - 'ईश्वरके चरणोंतक ले जानेमें सहायक जीवनका प्रत्येक कृत्य, अर्थात 'आचरण' तथा उसकी शिक्षा प्रदान करनेवाला धर्म है 'आचारधर्म ।' संक्षेप में, 'आचारधर्म' का अर्थ है दैनिक जीवनके प्रत्येक कृत्यका अध्यात्मीकरण, अर्थात प्रत्येक कर्म सात्त्विक एवं चैतन्यमय करना। इसलिए 'आचारधर्म-पालन'से ईश्वर प्राप्तिकी ओर बढनेमें सहायता मिलती है । आचारधर्ममें अनेक दैनन्दिन कृत्य हैं, जैसे घरको भीतरसे बाहरकी ओर, अर्थात द्वारकी दिशामें बुहारना; पुरुषोंका शर्ट-पैंटकी अपेक्षा कुर्ता-पजामा तथा स्त्रियोंका सलवार-कुर्ताकी अपेक्षा साडी पहनना; स्त्रियोंका चोटी/जूडा बनाना आदि।

धर्म एवं साधनाकी आधारशिला है 'आचारधर्म' !

'आचार: प्रभवो धर्म: ।' अर्थात 'धर्म आचारसे उत्पन्न हुआ है ।' हमारे धार्मिक जीवनकी रचना आचारधर्मपर निर्भर है । धर्माचरण एवं साधनाका उद्देश्य है 'ईश्वरप्राप्ति' । धर्माचरण एवं साधना करनेके प्रति मनकी प्रवृत्ति सत्त्वगुणपर निर्भर होती है । साधारण मनुष्य रजोगुणी और तमोगुणी होता है, इसलिए उसकी रुचि साधनामें नहीं होती । आचारधर्मके पालनसे व्यक्तिकी सात्त्विकता धीरे-धीरे बढती है और वह साधनामें रुचि लेने लगता है । इसके साथ ही आचारधर्मका पालन दिनके चौबीसों घण्टे करना आवश्यक होता है। इसीसे आगे चलकर पूरे दिन साधना करनेकी नींव रखी जाती है । उन्नत

साधक तथा सन्तोंकी साधना अन्तर्मनमें निरन्तर चलती रहती है । इसलिए वे यथार्थ अध्यात्म ही जीते हैं । वे आचारधर्मसे परे जा चुके होते हैं, इसलिए उन्हें मानसिक एवं बौद्धिक स्तरके आचारधर्मकी आवश्यकता नहीं रहती ।

प्रस्तुत ग्रन्थकी भूमिका

उपरोक्त विवेचनसे आचारधर्मका अनन्य महत्त्व समझमें आया ही होगा । किसी भी बातका महत्त्व विविध पहलुओंसे समझनेपर वह मानस पटलपर भली-भांति अंकित होता है और उसे आचरणमें लानेकी प्रेरणा भी मिलती है । इसी उद्देश्यसे प्रस्तुत ग्रन्थमें आचारधर्मके विविध अंगोंका महत्त्व बताया गया है । व्यष्टिके अर्थात व्यक्तिकी दृष्टिसे तथा समष्टिके अर्थात समाजकी दृष्टिसे आचारधर्मके विविध लाभ भी इसमें दिए हैं । साथ ही आचारधर्मका पालन न करनेसे क्या हानि हो सकती है, आचारके अनुसार आचरण कैसे करें, आचारधर्मका योग्य पद्धतिसे पालन करनेके लिए उपयुक्त घटक कौनसे हैं आदि बिन्दुओंका विवेचन भी इस ग्रन्थमें दिया गया है ।

आचारधर्मके पालनसे हिन्दुओंको धर्मका महत्त्व ज्ञात हो, उनमें जिज्ञासा जागृत हो व साधना हेतु प्रवृत्त हों, यही गुरुचरणोंमें प्रार्थना ! - **संकलनकर्ता**

विश्वके कल्याण हेतु दिव्य अध्यात्मज्ञान देनेवाली हिन्दुओंकी धार्मिक ग्रन्थसम्पदाका परिचय करानेवाला सनातनका अद्वितीय ग्रन्थ !

धर्मग्रन्थ (भाग २) दर्शन, स्मृति एवं पुराण

१. श्रुति एवं स्मृति में क्या भेद है ?

२. स्मृतिग्रन्थ कौनसे हैं ? मनुस्मृतिमें किन विषयोंका वर्णन है ?

३. पुराण किन सिद्धान्तोंका समर्थन करते हैं ? महत्त्वपूर्ण पुराण कौनसे हैं ?

४. धर्मग्रन्थोंपर की गई टीका-टिप्पणियोंके उत्तर क्यों व कैसे देने चाहिए ?

अनुक्रमणिका

१. आचरण, आचार एवं आचारधर्म, इन संज्ञाओंके अर्थ २१

२. आचारधर्मकी निर्मिति २३

३. युगानुसार आचारधर्मका स्वरूप २३

३ अ. त्रेता एवं द्वापर युगका आचारधर्म २३

३ आ. कलियुगमें आचारधर्म २४

४. आचारोंका कालानुसार परिवर्तनशील स्वरूप २४

५. आचारधर्म एवं बुद्धिवाद २५

६. आचारका महत्त्व २६

* आचारधर्म अर्थात धर्मकी अपेक्षासे अर्थ-कामका विनियोग २९

* आचार साधनाकी बीजस्वरूप नींव २९

* आचारोंका आचरण करनेवालेका सर्वश्रेष्ठ होना ३०

* आचारधर्मके कारण धर्मका अस्तित्व बना रहना ३२

७. आचारधर्मका पालन करनेके लाभ ३३

८. आचारधर्मका पालन न करनेसे होनेवाली हानि ४२

९. आचारोंके प्रकार ४४

१०. विविध स्वरूपके आचार ४४

११. आचारोंका किस प्रकार पालन करें ? ४६

१२. आचारधर्मके भलीभांति आचरण हेतु आवश्यक घटक ४७

१३. आचारधर्मका यथोचित पालन होनेका लक्षण – देशमें कृष्णमृगोंका मुक्त संचार होना ४८

१४. आचारधर्म एवं अन्य प्रकारकी साधनाकी तुलना ४९

१५. उन्नतोंको आचारधर्मका पालन करनेकी आवश्यकता नहीं ४९

'आचारधर्मकी प्रस्तावना'के सन्दर्भमें गहन ज्ञान

१. 'आचारधर्म' शब्दकी परिभाषा ५३
२. आचारधर्मकी उत्पत्ति ५३
३. आचारधर्मका महत्त्व ५६
४. जीवके स्तरानुसार धर्मका स्तर; धर्मपालनके बाह्यांग व अंतरंग की मात्रा तथा धर्मकी प्रकट एवं अप्रकट संवेदनाओंकी मात्रा ५९
५. स्तरानुसार धर्मका प्रकार, धर्मपालनसे सम्बन्धित देह, धर्मके प्रकारसे सम्बन्धित शक्तिका स्तर एवं धर्मपालनका प्रकार ६०
६. धर्मके विविध चरण एवं आचारधर्म ६२
७. कृतधर्म एवं आचारधर्म ६४
८. वैदिक धर्म एवं आचारधर्म ६५

विश्वके कल्याण हेतु दिव्य अध्यात्मज्ञान देनेवाली हिन्दुओंकी धार्मिक ग्रन्थसम्पदाका परिचय करानेवाला सनातनका अद्वितीय ग्रन्थ !

धर्मग्रन्थ (भाग १) वेद (विश्वका पहला वाङ्मय)

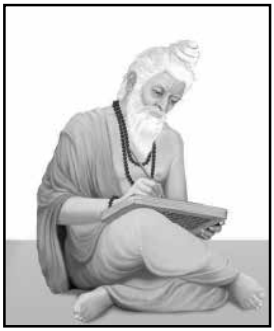

१. 'धर्मग्रन्थ' किसे कहना चाहिए तथा उसकी रचना कैसे हुई ?
२. हिन्दू धर्मके धर्मग्रन्थ कौन-से हैं तथा उनकी विशेषताएं क्या हैं ?
३. उपनिषदों व आरण्यकों की रचना कैसे हुई ?
४. धर्मग्रन्थानुसार आचरण क्यों आवश्यक है ?